

विषय-सूची

प्रस्तावना	3
अध्याय 1: धुंधली तस्वीर	5
अध्याय 2: पिता- एक कठोर व्यक्तित्व	9
अध्याय 3: मेहनती पिता	14
अध्याय 4: अधूरी इच्छाएँ	19
अध्याय 5: पहली नौकरी	24
अध्याय 6: बढ़ती दूरियाँ	30
अध्याय 7: अंतिम मुलाकात	35
अध्याय 8: खाली कुर्सी	40
अध्याय 9: पुरानी डायरी	46
अध्याय 10: एक पिता का सच	52
अध्याय 11: पिता का अंतिम संदेश- वह पत्र	57
अध्याय 12: इस बार धुंधली तस्वीर भी साफ दिखी	63
अध्याय 13: अंतिम संदेश	69

धुंधली तस्वीर

चेहरा धुंधला हुआ, पिता नहीं।

लेखक: सतीश कुमार

प्रकाशक: Satish Academy Online

कॉपीराइट

इस पुस्तक के सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित, संग्रहीत अथवा प्रसारित नहीं किया जा सकता।

समर्पण

मेरे श्रद्धेय पिता के साथ-साथ उन सभी पिताओं को, जिन्होंने अपने परिवार की खुशियों के लिए अपने सपनों, इच्छाओं और सुखों का निःस्वार्थ त्याग किया। जिन्होंने जीवन की कठिन राहों पर स्वयं संघर्ष किया, ताकि उनके बच्चों का मार्ग आसान हो सके। जिनकी मेहनत, ममता, त्याग और मौन प्रेम ने अनगिनत जीवनों को संवार दिया। यह कृति उन सभी पिताओं को सादर समर्पित है, जिनका योगदान शब्दों से परे है और जिनकी यादें समय के साथ और अधिक अमूल्य होती जाती हैं।

लेखक की ओर से

प्रिय पाठक,

"धुंधली तस्वीर" केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि उन अनकहे भावों का संग्रह है जो हम अक्सर अपने पिता से कभी कह नहीं पाते।

समय के साथ तस्वीरें धुंधली हो जाती हैं, लेकिन पिता का प्रेम, त्याग और उनकी यादें कभी धुंधली नहीं पड़तीं। यह पुस्तक उन सभी पिताओं को समर्पित है, जिन्होंने अपने सपनों से अधिक अपने बच्चों के सपनों को महत्व दिया।

यदि इस कहानी का कोई पन्ना आपको अपने पिता की याद दिला दे, तो मेरा लेखन सफल हो जाएगा।

(सतीश कुमार)

प्रस्तावना

कुछ रिश्ते शब्दों में नहीं समाए जा सकते, और पिता उन्हीं रिश्तों में से एक हैं। समय के साथ पुरानी तस्वीरों के रंग फीके पड़ जाते हैं। चेहरों की रेखाएँ धुंधली हो जाती हैं, कागज़ पर छपी मुस्कानें भी धीरे-धीरे मिटने लगती हैं। लेकिन कुछ चेहरे ऐसे होते हैं जो तस्वीरों में नहीं, दिल की दीवारों पर बस जाते हैं। वे कभी धुंधले नहीं पड़ते।

इस उपन्यास में एक पिता की कहानी है— उस पिता की, जिसने अपनी इच्छाओं को चुपचाप किनारे रखकर परिवार के सपनों को पूरा किया। जिसने कभी अपने दर्द का हिसाब नहीं माँगा, लेकिन अपनों की हर खुशी को अपनी जीत समझा। जिसने जीवन भर सबका सहारा बनकर साथ दिया, और जब चला गया तो पीछे एक ऐसा खालीपन छोड़ गया जिसे कोई भर नहीं सका।

"धुंधली तस्वीर" केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह उन अनगिनत पिताओं को समर्पित एक भावनात्मक श्रद्धांजलि है, जो अपने प्रेम का प्रदर्शन कम करते हैं, लेकिन अपने त्याग से पूरी दुनिया रच देते हैं।

इस उपन्यास के हर पन्ने में यादों की एक हल्की-सी खुशबू है, बिछड़ने का दर्द है, और उस प्रेम की गर्माहट है जो समय के साथ और गहरा होता जाता है।

जब आप इस उपन्यास को पढ़ेंगे, तो शायद आपको भी किसी पुरानी तस्वीर में छिपा अपना अतीत दिखाई दे। शायद आपको अपने पिता की मुस्कान याद आए, उनकी डाँट में छिपी चिंता याद आए, या उनके वे त्याग याद आए जिन्हें आपने कभी शब्द नहीं दिए।

क्योंकि सच यही है—

तस्वीर धुंधली हो सकती है, यादें नहीं।

चेहरा ओझल हो सकता है, पिता नहीं।

अध्याय 1: धुंधली तस्वीर

शाम का समय था।

सूरज धीरे-धीरे डूब रहा था और आसमान लाल-पीले रंगों से भर गया था। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति ने अपने रंग पूरे आकाश में बिखेर दिए हों। घर का आँगन बिल्कुल शांत था। कभी इसी आँगन में बच्चों की हँसी और शोर सुनाई देता था, लेकिन आज वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे यह आँगन अपने भीतर कोई गहरा दर्द समेटे बैठा हो। रक्षित वर्षों बाद अपने पुश्तैनी घर लौटा था।

घर वैसा ही था।

दीवारें वही थीं।

दरवाज़े वही थे।

आँगन का नीम का पेड़ भी वहीं खड़ा था।

लेकिन कुछ बदल गया था।

बहुत कुछ बदल गया था।

घर में अब उसके पिता नहीं थे।

जिस व्यक्ति की आवाज़ कभी इस घर की पहचान थी, आज उसकी अनुपस्थिति हर कोने से महसूस हो रही थी।

पिता के जाने के बाद यह उसका पहला आगमन था।

लोग कहते हैं कि समय हर घाव भर देता है। लेकिन कुछ घाव ऐसे होते हैं जो समय के साथ भरते नहीं, बल्कि और गहरे होते जाते हैं।

रक्षित भी ऐसे ही एक घाव को अपने भीतर लिए हुए था। उसने कमरे का दरवाज़ा खोला। कमरे में हल्की धूल जमी हुई थी। खिड़की से आती हवा पुराने कागज़ों की गंध अपने साथ लिए घूम रही थी। सब कुछ वैसा ही रखा था, जैसे पिता छोड़कर गए थे।

टेबल पर रखा पुराना चश्मा।

कोने में टंगी घड़ी।

दीवार पर टंगा कैलेंडर।

और वह लकड़ी की कुर्सी...

जिस पर बैठकर उसके पिता हर शाम अखबार पढ़ा करते थे। रक्षित की नज़र उस कुर्सी पर टिक गई। कुर्सी खाली थी। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे अभी भी पिता वहीं बैठे हों। जैसे अभी वे अखबार मोड़कर उससे पूछेंगे—

"कैसा है बेटा?"

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। कमरा चुप था। और उस चुप्पी में हजारों अनकहे शब्द तैर रहे थे। रक्षित धीरे-धीरे अलमारी के पास पहुँचा। अलमारी खोलते ही वर्षों पुरानी यादें उसके सामने बिखर गईं।

पुरानी किताबें। कुछ सरकारी कागज़। एक टूटी हुई घड़ी। और नीचे कोने में रखा एक पुराना डिब्बा। उसने डिब्बा खोला। अंदर कुछ तस्वीरें रखी थीं। पीली पड़ चुकी तस्वीरें। समय की मार झेल चुकी तस्वीरें।

वह एक-एक तस्वीर देखने लगा। अचानक उसकी उंगलियाँ एक तस्वीर पर ठहर गईं। तस्वीर थोड़ी धुंधली थी। किनारे फटे हुए थे।

लेकिन तस्वीर में जो दिख रहा था, उसने रक्षित की साँसें रोक दीं। तस्वीर में एक छोटा बच्चा अपने पिता के कंधों पर बैठा हँस रहा था। वह बच्चा रक्षित था। और उसे कंधों पर उठाने वाला व्यक्ति उसके पिता।

रक्षित तस्वीर को देर तक देखता रहा। आँखें भर आईं। उसे याद नहीं था कि यह तस्वीर कब खींची गई थी। लेकिन उस तस्वीर में पिता के चेहरे पर जो मुस्कान थी, वह उसे भीतर तक हिला रही थी। उसे अचानक महसूस हुआ—

****आगे पढ़ने के लिए खरीदें****